विषय-सूची

विषय ..... गाथा - - पृष्ठ

पहली ढाल

मंगलाचरण १

ग्रन्थरचनाका उद्देश्य और जीवोंकी इच्छा ..... १ ------ ३

गुरुशिक्षा सुननेका आदेश तथा संसार-परिभ्रमणका कारण २ ------ ४

इस ग्रन्थकी प्रामाणिकता और निगोदका दुःख ..... ३ ------ ५

निगोदका दुःख और वहाँसे निकलकर प्राप्तकी हुई पर्यायें .. ४ ------ ५

तिर्यंचगतिमें त्रस पर्यायकी दुर्लभता और उसका दुःख ..... ५ ------ ७

तिर्यंचगतिमें असंज्ञी तथा संज्ञीके दुःख ..... ६ ------ ८

तिर्यंचगतिमें निर्बलता तथा दुःख ..... ७ ------ ९

तिर्यंचके दुःखकी अधिकता और
नरक गतिकी प्राप्तिका कारण ..... ८ ---- १०

नरकोंकी भूमि और नदियोंका वर्णन ..... ९ ---- ११

नरकोंके सेमल वृक्ष तथा सर्दी-गर्मीके दुःख ..... १० --- १२

नरकोंमें अन्य नारकी, असुरकुमार तथा प्यासका दुःख .... ११ --- १४

नरकोंकी भूख, आयु और मनुष्यगति प्राप्तिका वर्णन ..... १२ ---- १५

मनुष्यगतिमें गर्भ निवास तथा प्रसवकालके दुःख ..... १३ --- १६

मनुष्यगतिमें बाल, युवा और वृद्धावस्थाके दुःख ..... १४ --- १७

देवगतिमें भवनत्रिकका दुःख ..... १५ ---- १८

देवगतिमें वैमानिक देवोंका दुःख ..... १६ ---- १९

सार २०

पहली ढालका सारांश २०

पहली ढालका भेद-संग्रह २३
पहली ढालका लक्षण-संग्रह २४
वीतरागका लक्षण २६
अन्तर-प्रदर्शन २७
पहली ढालकी प्रश्नावली २८

दूसरी ढाल

संसार (चतुर्गति)में परिभ्रमणका कारण ..... १ ---- ३०
अगृहीत-मिथ्यादर्शन और जीवतत्त्वका लक्षण ..... २ ---- ३१
जीवतत्त्वके विषयमें मिथ्यात्व (विपरीत श्रद्धा) ..... ३ ---- ३२
मिथ्यादृष्टिका शरीर तथा परवस्तुओं सम्बन्धी विचार ..... ४ ---- ३३
अजीव और आस्त्रवतत्त्वकी विपरीत श्रद्धा ..... ५ ---- ३४
बन्ध और संवरतत्त्वकी विपरीत श्रद्धा ..... ६ ---- ३६
निर्जरा और मोक्षकी विपरीत श्रद्धा तथा अगृहीत मिथ्याज्ञान ७ ---- ३७
अगृहीत मिथ्याचारित्र (कुचारित्र)का लक्षण ..... ८ ----- ३९
गृहीत मिथ्यादर्शन और कुगुरुके लक्षण ..... ९ ---- ४०
कुदेव (मिथ्यादेव)का स्वरूप ..... १० --- ४१
कुधर्म और गृहीत मिथ्यादर्शनका संक्षिप्त लक्षण ११-१२ ४२
गृहीत मिथ्याज्ञानका लक्षण ..... १३ --- ४४
गृहीत मिथ्याचारित्रका लक्षण ..... १४ ---- ४५
मिथ्याचारित्रके त्यागका तथा आत्महितमें लगनेका उपदेश . १५ --- ४६
दूसरी ढालका सारांश ४७
दूसरी ढालका भेद-संग्रह ४९
दूसरी ढालका लक्षण-संग्रह ४९
अन्तर-प्रदर्शन ५०
दूसरी ढालकी प्रश्नावली ५१

तीसरी ढाल

आत्महित, सच्चा सुख तथा दो प्रकार से मोक्षमार्गका कथन १ ----- ५३

निश्चयसम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रका स्वरूप ..... २ ----- ५६

व्यवहार सम्यक्त्व (सम्यग्दर्शन)का स्वरूप ..... ३ ----- ५७

जीवके भेद, बहिरात्मा और उत्तम अन्तरात्माका लक्षण .... ४ ----- ५८

मध्यम और जघन्य अन्तरात्मा तथा सकल परमात्मा ..... ५ ---- ६०

निकल परमात्माका लक्षण तथा परमात्माके ध्यानका उपदेश ६ ---- ६२

अजीव–पुद्गल, धर्म और अधर्मद्रव्यके लक्षण तथा भेद .. ७ ---- ६३

आकाश, काल और आस्त्रवके लक्षण अथवा भेद..... ८ ----- ६५

आस्त्रवत्यागका उपदेश और बन्ध, संवर, निर्जराका लक्षण ९ ---- ६७

मोक्षका लक्षण, व्यवहारसम्यक्त्वका लक्षण तथा कारण ... १० --- ७०

सम्यक्त्वके पच्चीस दोष तथा आठ गुण ..... ११ --- ७१

सम्यक्त्वके आठ अंग (गुण) और शंकादि आठ
दोषोंका लक्षण १२-१३ ७३

मद नामक आठ दोष १३-१४ ७७

छह अनायतन तथा तीन मूढ़ता दोष ..... १४ ---- ७९

अव्रती समकितीकी देवों द्वारा पूजा और ज्ञानीकी
गृहस्थपनेमें अप्रीति..... १५ ---- ८०

सम्यक्त्वकी महिमा, सम्यग्दृष्टिके अनुत्पत्ति स्थान तथा
सर्वोत्तम सुख और सर्व धर्मका मूल..... १६ ---- ८१

सम्यग्दर्शनके बिना ज्ञान और चारित्र का मिथ्यापना ..... १७ ---- ८३

तीसरी ढालका सारांश..... ८५

तीसरी ढालका भेद-संग्रह ८७

तीसरी ढालका लक्षण-संग्रह ८८

अन्तर-प्रदर्शन ६१
तीसरी ढालकी प्रश्नावली ६२

चौथी ढाल

सम्यग्ज्ञानका लक्षण और उसका समय ..... १ ----- ६४
सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानमें अन्तर ..... २ ----- ६५
सम्यग्ज्ञानके भेद, परोक्ष और देशप्रत्यक्षके लक्षण ..... ३ ----- ६७
सकल-प्रत्यक्ष ज्ञानका लक्षण और ज्ञानकी महिमा ..... ४ ----- ६८
ज्ञानी और अज्ञानीके कर्मनाशके विषयमें अन्तर ..... ५ --- १००
ज्ञानके दोष और मनुष्यपर्याय आदिकी दुर्लभता ..... ६ --- १०१
सम्यग्ज्ञानकी महिमा और कारण ..... ७ --- १०३
सम्यग्ज्ञानकी महिमा और विषयेच्छा रोकनेका उपाय ..... ८ --- १०५
पुण्य-पापमें हर्ष-विषादका निषेध और तात्पर्यकी बात ..... ९ --- १०६
सम्यक्चारित्रका समय और भेद तथा
अहिंसाणुव्रत और सत्याणुव्रतका लक्षण ..... १० -- १०८
अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत
तथा दिग्व्रतका लक्षण ..... ११ -- ११०
देशव्रत (देशावगाशिक) नामक गुणव्रतका लक्षण ..... १२ -- ११३
अनर्थदंडव्रतके भेद और उनका लक्षण ..... १३ -- ११४
सामायिक, प्रोषध, भोगोपभोगपरिमाण और
अतिथिसंविभागव्रत ..... १४ -- ११६
निरतिचार श्रावक व्रत पालन करनेका फल ..... १५ -- ११७
चौथी ढालका सारांश ११९
चौथी ढालका भेद-संग्रह १२१
चौथी ढालका लक्षण-संग्रह १२३

चौथी ढालका अन्तर-प्रदर्शन १२६
चौथी ढालकी प्रश्नावली १२७

पाँचवीं ढाल

भावनाओंके चिंतवनका कारण, उसके
अधिकारी और उसका फल ..... १ --- १३०
भावनाओंका फल और मोक्षसुखकी प्राप्तिका समय ..... २ --- १३१
१. अनित्य भावना ..... ३ --- १३२
२. अशरण भावना ..... ४ --- १३३
३. संसार भावना ..... ५ --- १३४
४. एकत्व भावना ..... ६ --- १३५
५. अन्यत्व भावना ..... ७ --- १३६
६. अशुचि भावना ..... ८ --- १३८
७. आस्रव भावना ..... ९ --- १३९
८. संवर भावना ..... १० -- १४१
९. निर्जरा भावना ..... ११ -- १४२
१०. लोक भावना ..... १२ -- १४३
११. बोधिदुर्लभ भावना ..... १३ -- १४४
१२. धर्म भावना ..... १४ -- १४५
आत्मानुभवपूर्वक भावलिंगी मुनिका स्वरूप ..... १५ -- १४६
पाँचवीं ढालका सारांश १४७
पाँचवीं ढालका भेद-संग्रह १४८
पाँचवीं ढालका लक्षण-संग्रह १४९
अन्तर-प्रदर्शन १५१
पाँचवीं ढालकी प्रश्नावली १५१

छठवीं ढाल

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य महाव्रतके लक्षण ..... १ --- १५३
परिग्रहत्याग महाव्रत, ईर्या समिति और भाषा समिति ..... २ --- १५५
एषणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन समिति ..... ३ --- १५८
मुनियोंकी तीन गुप्ति और पाँच इन्द्रियों पर विजय ..... ४ --- १६०
मुनियोंके छह आवश्यक और शेष सात मूलगुण ..... ५ --- १६२
मुनियोंके शेष गुण तथा राग-द्वेषका अभाव ..... ६ --- १६३
मुनियोंके तप, धर्म, विहार तथा स्वरूपाचरणचारित्र ..... ७ --- १६६
स्वरूपाचरणचारित्र (शुद्धोपयोग)का वर्णन ..... ८ --- १६९
स्वरूपाचरणचारित्र (शुद्धोपयोग)का वर्णन ..... ९ --- १७१
स्वरूपाचरणचारित्रका लक्षण और निर्विकल्प ध्यान ..... १० -- १७२
स्वरूपाचरणचारित्र और अरिहन्तदशा ..... ११ -- १७४
सिद्धदशाका (सिद्धस्वरूप)का वर्णन ..... १२ -- १७६
मोक्षदशाका वर्णन ..... १३ -- १७८
रत्नत्रयका फल और आत्महितमें प्रवृत्तिका उपदेश ..... १४ -- १७९
अन्तिम सीख ..... १५ -- १८१
ग्रन्थ-रचनाका काल और उसमें आधार ..... १६ -- १८३
छठवीं ढालका सारांश १८३
छठवीं ढालका भेद-संग्रह १८५
छठवीं ढालका लक्षण-संग्रह १८७
अन्तर-प्रदर्शन १८९
प्रश्नावली १८९